माधो सिंह भण्डारी की अविस्मरणीय कहानी

माधो सिंह भंडारी, इन्हें माधो सिंह मलेथा नाम से भी जाना जाता है। माधो सिंह भंडारी का जन्म सन् १५९५ के आसपास उत्तराखंड राज्य के टिहरी जनपद के मलेथा नामक गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम सोणबाण कालो भंडारी था। जो वीरता के लिए प्रसिद्ध थे उनकी की बुद्धिमता और वीरता से प्रभावित होकर तत्कालीन गढ़वाल नरेश ने सोणबाण कालो भंडारी को एक बड़ी जागीर भेंट की थी।
माधो सिंह भी अपने पिता की तरह वीर व स्वाभिमानी थे। माधो सिंह भंडारी कम उम्र में ही श्रीनगर के शाही दरबार की सेना में भर्ती हो गये और अपनी वीरता व युद्ध कौशल से सेनाध्यक्ष के पद पर पहुंच गये। वह राजा महिपात शाह (१६२९-१६४६) की सेना के सेनाध्यक्ष थे। जहां उन्होने कई नये क्षेत्रों में राजा के राज्य को बढ़ाया और कई किले बनवाने में मदद की।

एक बार छुट्टियों में जब वह अपने गांव मलेथा आये तो वहां उन्हें वह स्वादिष्ट भोजन नहीं मिला जिसको वह राज-महल में खाने के आदि थे। वह अपनी पत्नी पर गुस्सा हुए और उन्होने अच्छा भोजन मांगा जबाब में पत्नी नें उन्हे वे सूखे खेत दिखा दिये जो पानी के अभाव में अनाज, फल व सबजियां उगाने में असमर्थ थे। माधों सिंह बेचैन हो गये उन्होने निश्चय किया किसी भी तरह मलेथा गांव में पानी लेकर आयेंगें।
गांव से कुछ दूर चन्द्रभागा नदी बहती थी, लेकिन नदी व गांव की बीच में बड़े-बड़े पहाड़ व चट्टानें थीं। माधो सिंह ने विचार किया कि अगर किसी प्रकार पर्वतीय नदी के मध्य आने वाले पहाड़ के निचले भाग में सुरंग निर्माण की जाये तो नदी का पानी गांव तक पहुंचाया जा सकता है। दृढ़ निश्चय माधो सिह ने सुरंग खोदने वाले विशेषज्ञों व गांव वालों को साथ लेकर काम शुरू कर दिया।

महीनों की मेहनत के बाद सुरंग तैयार हो गयी। सुरंग के उपरी भाग में मजबूज पत्थरों को लोहे की कीलों से इस प्रकार सुदृढ़ता प्रदान की गयी कि भीषण प्राकृतिक आपदा का भी उन पर प्रभाव नहीं पड़ सके।
माधो सिंह को अपने जवान पुत्र गजे सिंह को नहर बनाने की प्रक्रिया में बलि पर चढ़ाना पडा। उस क्षेत्र की लोक कथाओं के अनुसार जब सुरंग बनकर तैयार हो गयी तब नदी के पानी को सुरंग में ले जाने के अनेक प्रयास किये गये लेकिक कई तरह के बदलावों, पूजापाठों के बाद भी नदी का पानी सुरंग तक नहीं पहुंच पाया। माधो सिंह काफी परेशान हो गये।

एक रात माधो सिंह को सपना आया कि उन्हे पानी लाने के लिये अपने एकमात्र बेटे की बलि देनी पड़ेगी। पहले तो वह इसके लियें तैयार नहीं थे, लेकिन बाद में अपने पुत्र गजे सिंह के ही कहने पर वह तैयार हो गये। उनके पुत्र की बलि दी गयी और उसका सर सुरंग के मुँह पर रख दिया गया।
इस बार जब पानी को मोड़ा गयो जो इस बाद पानी सुरंग से होते हुए सर को अपने बहाव में बहा ले गया और उसे खेतों में प्रतिष्ठापित कर दिया। जल्दी ही माधों सिंह की छुट्टियां खतम हो गयी और वह वापस श्रीनगर चले गये फिर कभी अपने गांव लौट कर न आने का निर्णय किया।

आज मलेथा गांव समृद्ध व हरा भरा है, लेकिन उस गांव के लोग अभी भी अपने नायक माधो सिंह को नहीं भूले है। और वही माधो सिंह द्वारा बनाये गयी नहर आज तकरीबन चार सौ सालों बाद भी मलेथा तक पानी पहुंचा रही है।